मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- भद्दी इंजीनियरिंग और घटिया गुणवत्ता का नमूना बना राजमार्ग का बाटा मोड़ फ्लाईओवर 3
- कुत्ते से स्वामी भक्ति सीखी जाती है, राष्ट्र भक्ति नहीं मोदी जी ! 4
- कई हस्तियों की शादी हुयी, शोर ऐसा था मानो वे इस मुल्क के लिए कोई बड़ा काम कर रहे थे 5
- हरियाणा के कर्मचारी जनता की लड़ाई लड़ रहे हैं, जनता खामोश है 8

वर्ष 31 अंक -21 फ़रीदाबाद 20-26 मई 2018 फोन : - 9999595632 ₹2

लाव लश्कर के साथ डीजीपी संधू पहुंचे सिद्धदाता की शरण में

पाखंडी बाबा की चरण-वंदना से कानून व्यवस्था चलेगी ?

फरीदाबाद (म.मो.) सूरजकुंड स्थित होटल राजहंस में एक हाई-फ़ाई शादी में आये हरियाणा के पुलिस प्रमुख डीजीपी बलजीत सिंह संधू थाना सदर बल्लबगढ के नये भवन के उद्घाटन में पुलिस वालों को नैतिक पाठ पढा कर, रविवार प्रात: सिद्धदाता आश्रम पहुंचे। उन्होंने आश्रम के मालिक, 'अधिष्ठाता श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज' की चरणवंदना करके उनका आशीर्वाद एवं प्रसाद ग्रहण किया।

बाबा ने अपना नाम भी कितना लम्बा-चौड़ा रखा है, जगदगुरू, आचार्य और महाराज जी तक सब कुछ अपने आप को बना रखा है।

डीजीपी संधू के मुताबिक बाबा के दर्शन करके उनकी बरसों पुरानी मुराद पूरी हो गयी है और अगली बार वे सपरिवार यहां आयेंगे। बेशक, चार माह बाद सेवानिवृत होकर स्थाई तौर पर रहने लगें तो भी किसी को कोई समस्या नहीं। समस्या है तो आज केवल इतनी कि बावर्दी शीर्ष पुलिस अधिकारी अपने साथ अन्य पुलिस अफ़सरों को लेकर उस पाखंडी बाबा के

दरबार में पहुंचे जिस पर खुद थाना सूरजकुंड में एफ़आईआर दर्ज है।

इस मुकदमे से सम्बन्धित विस्तृत विवरण '**मज़दूर मोर्चा**' के 16-30 जून 2016 अंक में प्रकाशित किया जा चुका है। उसका कुछ अंश साथ लगे बॉक्स में दिया गया।

बाबा ने अपने आशीर्वाद प्रवचन में कहा कि डीजीपी संधू जैसे धार्मिक व्यक्ति से जनता को प्रेरणा मिलती है। वास्तव में यही प्रेरणा तो खतरनाक है। इसी प्रेरणा के सहारे इस देश के तमाम बाबों का अंधविश्वास बेचने का कारोबार खूब फल-फूल रहा है। वैसे तो मुख्यमंत्रियों, मन्त्रियों आदि के आने से बाबों का व्यापार

शेष पेज दो पर

'मजदूर मोर्चा' 16-30 जून 2016 से...

आशीर्वाद लेने के पश्चात सीपी साहब आश्रम के संस्थापक बाबा सुदर्शनाचार्य की समाधि पर भी माथा रगड़ने पहुंचे। इस सुदर्शनाचार्य के बारे में सीपी साहब जान लें कि 30-35 वर्ष पूर्व वह सेक्टर 16 के एक किराये के मकान में रहता था और उसकी वाहियात हरकतों से पूरा मोहल्ला परेशान रहता था। अकसर वहां झगड़ा भी होता था। तत्कालीन मुख्यमंत्री भजनलाल की कृपा से उसे आश्रम की जगह पर यहां एक छोटा सा प्लॉट देकर बसाया गया था। वही प्लॉट अब अवैध रूप से फ़ैल-फ़ैल कर विशाल प्लॉट बन गया है। इतना ही नहीं तत्कालीन कॉम्प्लेक्स प्रशासन के मुख्य प्रशासक आर के रंगा जब कभी घूमते-फिरते इस आश्रम पर जाते थे तो सुदर्शनाचार्य बाकायदा उनके चरण स्पर्श किया करता था।

सीपी साहब को इस बात का भी इल्म होना चाहिये कि सुदर्शनाचार्य के मरने के पश्चात आश्रमरूपी इस जायदाद पर कब्ज़े के लिये वारिसान में काफ़ी झगड़े चल रहे हैं। मामला पुलिस तक भी पहुंचा था। सुदर्शनाचार्य के दोनों बेटों में से बड़ा गद्दी पर काबिज है जबकि छोटा भी रहता तो वहीं पर है परन्तु गद्दी की मलाई से दूर। इसी मलाई को लेकर दोनों गुटों में जबरदस्त मारपीट हो चुकी है और दोनों तरफ़ से थाना सुरजकुंड में फ़ौजदारी मुकदमें दर्ज हैं। इसमें दोनों पक्षों के करीब 15-15 लोग जमानतों पर हैं। सीपी साहब के लिये यह जान लेना भी जरूरी है कि अवैध कब्ज़े को लेकर इन्हे सरकार की ओर से नोटिस बरसों पहले ज़ारी हो चुके हैं। एक बार तो तोड़-फ़ोड़ दस्ता कार्यवाही करने पहुंच भी गया था। लेकिन राजनीतिक दखलंदाज़ी के चलते कार्यवाही कुछ खास हो नहीं पाई थी। हालांकि देर-सबेर होनी तो जरूर है।

सीतापुर में मेनका गांधी के आदमखोर कुत्तों ने खा लिये 15 बच्चे, अब लोग़ों ने भी लट्ठ उठा लिये!

सीतापुर से मज़दूर मोर्चा रिपोर्ट

उत्तरप्रदेश के ज़िला सीतापुर के गांवों में गत 7 माह में आवारा कुत्तों ने 15 बच्चों को अपना निवाला बना लिया है। ये सभी बच्चे उस ग़रीब निम्न वर्ग से हैं जिनके मां-बाप मज़दूरी करते हैं और अपने बच्चों की देखभाल पर अधिक समय नहीं दे पाते। आवारा कुत्तों को वरद्हस्त देने की शोहरत केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी की रही है।

बीते पखवाड़े जब एक ही दिन में 4 बच्चे इन कुत्तों की भेंट चढ गये तो ज़िला प्रशासन कुछ हरकत में आया। ज़िले के अधिकारी हाथों में डंडे लेकर कुत्तों को खोजने का नाटक करते नज़र आये। लेकिन उन्हें एक भी कुत्ता नहीं मिला। हां, इस सरकारी नाटक के बाद ज़िले के डीसी ने हिदायत जारी की कि बच्चों को बाहर न निकलने दें।

सरकारी नाटक के कुछ ही दिन बाद कुत्तों ने 3 और बच्चों को अपना निवाला बना लिया। गांव वालों को सांत्वना देने मातमपुरसी को पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घड़ियाली आंसू बहाते हुये मारे गये बच्चों के मां-बाप को 2-2 लाख रुपये का मुआवज़ा तो घोषित कर दिया लेकिन उन कुत्तों से ग्रामीणों को छुटकारा दिलाने की कोई योजना प्रस्तुत नहीं की। यानी कुत्ते बच्चों को यूं ही खाते रहेंगे और योगी जी सरकारी खजाने से मुआवज़ा बांटते रहेंगे।

लेकिन ग्रामीणों को यह सब मंजूर नहीं था। लिहाज़ा उन्होंने सामुहिक रूप से लठ उठाये और उन कुत्तों को मार डाला जो ज़िले के सरकारी अफ़सरों को 'ढूंढने' से नहीं मिले थे। जाहिर है गांव वाले अपने बच्चों का जीवन योगी के भरोसे तो नहीं ही छोड़ सकते थे। परन्तु यूपी से ही भाजपा सांसद एवं केन्द्रीय मन्त्री मेनका गांधी को ग्रामीणों की यह कार्यवाही पसंद नहीं आई है। लिहाज़ा उनके एजेंट कुत्तों की वकालत करने लखनऊ और दिल्ली के मैदान में आ उतरे। इन एजेंटों एवं कुत्ता-प्रेमियों ने ग्रामीणों के विरुद्ध कड़े बयान देते हुए सरकार से, उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने की मांग की है। यानी ग्रामीण बच्चे मरते हैं तो मरें लेकिन कुत्तों को नहीं मारा जाना चाहिये।

मेनका गिरोह को कुत्ते इतने प्यारे हैं तो इन्हें अपने-अपने घरों में क्यों नहीं पालते ये ड्रामेबाज ? इस तरह के कुत्ता प्रेमी केवल सीतापुर में ही नहीं बल्कि पूरे देश भर में फ़ैले हुए हैं। फ़रीदाबाद शहर भी इसका एक उदाहरण है। यहां पचासों लोग हर रोज़ कुत्ते काटे के शिकार होते हैं लेकिन सरकारी बीके अस्पताल व अन्य किसी भी सरकारी डिस्पेंसरी में रैबीज के टीके यदा-कदा ही उपलब्ध होते हैं। इसके चलते सरकारी अस्पताल में 110 रुपये में लगने वाला टीका बाहर से 400 रुपये प्रति टीके के हिसाब से 4 टीके लगवाने पड़ते हैं। सरकारी अस्पताल का रिकार्ड देखने से पता चलता है कि 10 से 12 हजार प्रति वर्ष कुत्ता काटे के लोग फ़रीदाबाद में यहां पंजीकृत होते हैं और इससे दुगणे-लोग अपना इलाज बाहर से करवाते हैं।

जाहिर है कि ऐसे में रैबीज की टीके बनाने वाली कम्पनी का करोबार अच्छा-खासा फल-फूल रहा है। इन हालात को देखते हुए लगता है कि मेनका गांधी का कुत्ता प्रेम टीका बनाने वाली कम्पनियों का मुनाफ़ा बढाने के लिये कारगर सिद्ध हो रहा है। कम्पनियों को होने वाले मुनाफ़े में से मेनका को मिलने वाले लाभांश से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

शेष पेज दो पर

कर नाटक : मोदी साम्राज्य का पतन!

कहां छिप गया 'चाणक्य' अमित शाह! सौ-सौ करोड़ में विधायक खरीदने निकला था! मणिपुर, मेघालय, गोवा में तो खरीद लाया था, अब कर्नाटक में फेल कैसे हो गया ? खैर, हमने कौन सा भला ईमानदारी से सरकार बनानी थी जो विधानसभा में विश्वास मत पेश करते। तभी हमारे चेले येदियुरप्पा ने इस्तीफा दे दिया। बेशर्म जूतखोर पार्टी!